

पद ६७

(रागः अल्हैया बिलावल - तालः झपताल)

नमो घोरतर कालाग्निरुद्ररूपा । कोटि विद्युज्ज्वलद्वीरभूपा ॥ध्रु.॥
रक्ताक्षि कटकटोलहासकृत दंतरव । पुच्छकृत फटफटोड्डाण शूरा ।
भूत वेतालगण पाद नख सेविता । सौमित्रजीवनाधार धीरा ॥१॥
विश्वबल दैत्य सुर दानवां प्राण तूं । मंत्रफलदानैकबद्ध दीक्षा ।
वज्रांग वज्रनख काल कालांतका । अपमृत्यु दैन्य रोगारि
भक्षा ॥२॥ एकमुख पंच एकादशानन हरे । त्राहि मां पाहि अति
संकटत्राता । माणिकक्षेत्राभिमानरक्षणदक्ष पूर्ण चिन्मार्ताण्ड
कामफलदाता ॥३॥